ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

Volume 11, Issue 2, March 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

IMPACT FACTOR: 7.583

| www.ijarasem.com | ijarasem@gmail.com | +91-9940572462 |

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 2, March 2024 |

अज्ञेय की कविताओं में जीवन मूल्य

डॉ. संगीता रोहिला
सहायक आचार्य–हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय, राजलदेसर (चूरू) (राजसेस)

सारांश

जीवन को आधुनिकता से जोड़कर समय के प्रयास को अब सार्थक एवं अधिक महत्वपूर्ण माना जाने लगा है। जीवन के पक्ष को आधुनिकता के सन्दर्भ प्रस्तुत करने का जो भी प्रयास किया जाता है वह अधिक वैज्ञानिक होने के कारण सरलता से स्वीकार्य समझा जाता है। आधुनिकता का सीधा सम्बन्ध काल से है। गतिकाल का अस्तित्व एवं प्रगति उसकी प्रकृति से ही है। काल की गतिशीलता में ही मानव की अन्वेषी प्रतिभा प्रकृति का सौन्दर्य एवं नियति का रहस्य समन्वित रहता है। अज्ञेय की रचना का एक उदाहरण दृष्टव्य है–

लो यह स्मृति, यह श्रद्धा, यह हंसी,
यह आहूत, स्पर्श–पूतभाव,
यह मैं, यह तुम यह खिलना,
यह ज्वार, यह प्लवन,
यह प्यार, यह अडूब उमड़ना,
सब तुम्हें दिया।

मूल शब्द : आधुनिक, युग बोध, जीवन मूल्य, मानवीयता, समाज, समकालीन कविता

अज्ञेय का कवि यहां बतलाए गये जीवन मूल्यों को सर्वाधिक मूल्यवान मानता है। समृति, हंसी, भाव एवं प्यार सबके सब ऐसे मूल्य हैं जिनका स्थूल जगत की तुला पर आकलन कर पाना असंभव है।

मानवीय संस्कृति का आधार जीवन मूल्य है। जीवन मूल्य ही मनुष्य को मनुष्य बनाने का कार्य करते हैं। मूल्य ही है जो मानवीयता का गुण पैदा कर मानवीय सम्बन्धों को सकारात्मक रूप प्रदान करता है। साहित्य एक ऐसा माध्यम है जो मानवीयता को एवं मानवीय मूल्यों को जन सामान्य तक पहुँचाने का कार्य करता है। साहित्य की समस्त विधाओं में मानवीय मूल्य नीहित होते हैं और वे जन

मानस तक पहुँचाते हैं, किन्तु कविता का इसमें विशेष स्थान है। हिन्दी कविता साहित्य के अब तक के इतिहास का इसमें विशेष स्थान है। हिन्दी कविता साहित्य के अब तक के इतिहास को देखें तो हम यह समझा सकते हैं कि इसके केन्द्र में मानवीयता एवं मानव मूल्य ही रहे हैं।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जीवन मूल्यों से ही व्यक्ति का विकास होता है एवं वह समाज का अंग बनता है। मूल्य ही मनुष्य को श्रेष्ठ आचरण करने की प्रेरणा देता है। इनका उॅश्य मानव जीवन में नैतिक आचरण का विकास करना होता है। मानव जीवन के हित साधन करनेवाली, उसके जीवन को सुख, सुरक्षा विकास की ओर ले जानेवाली सभी धारणा को हम जीवन मूल्य कह सकते हैं।

आधुनिक वस्तुतः एक कालवाची शब्द है जो युग के सन्दर्भ में नवीन जीवन दर्शन और विचार–पद्वति से जुड़कर अपना अस्तित्व घोषित करता है। जीवन को आधुनिकता से जोड़कर समय के प्रयास को अब सार्थक एवं अधिक महत्वपूर्ण माना जाने लगा है। आधुनिक कविता में यह सिद्ध करने का प्रयास भी किया है कि कला, कला की ही नहीं अपतु जीवन की प्रेरक शक्ति भी है। कविता और जीवन मूल्यों का सम्बन्ध एक ऐवा विषय है जिस पर स्वतंत्र रूप से विचार करना अपेक्षित है।

वर्तमान समाज में विषमता और विकृतियाँ अत्यधिक बढ़ गई है। मनुष्य संवेदनशून्य होता जा रहा है। संवेदनशून्यता की ओर बढ़ते मनुष्य को रोकने का एवं जागृति लाने का कार्य साहित्य कर रहा है, जिनमें आधुनिक कविताओं में मूल्यों के वर्णन को शामिल किया जा सकता है। आज जहाँ सम्पूर्ण विश्व असंतोष एवं विध्वंसक छाया से घिरा हुआ है ऐसे में विनाश को रोकने के साथ मन मस्तिष्क को मूल्यों की तरफ ले जाने का साहित्य उपयुक्त माध्यम बन सकता है। अज्ञेय अपने सृजन को परिवर्तन का हथियार मानते हैं और इसके माध्यम से मनुष्य को मूल्यों कि शिक्षा देना चाहते हैं जो मनुष्य के नाते उनमें होने आवश्यक है। इसी मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए उनकी कविताएं संघर्ष करती है क्योंकि इसी से स्वस्थ समाज का निर्माण सम्भव हो सकता है।

कविता के माध्यम से जन–जीवन एवं समाज को किस प्रकार अन्नत एवं आधुनिक बनाया जा सकता है, यह आज के रचनाकार की चेतना है। आधुनिक धारा के कवि अज्ञेय ने अपनी रचनाओं को समसामयिकता से जोड़ते हुए विविध जीवन–मूल्य स्थापित करने सार्थक प्रयास किया है। इनकी दीर्घ कवितायें– 'अन्तः सलिला', 'चक्रान्तशीला' और 'असाध्य वीणा' में जीवन मूल्य को स्थान–स्थान पर देखा जा सकता है।

अन्तः सलिला के प्रथम खण्ड 'सरस्वती पुत्र' में कवि मानव–शिशु को राम–नाम की रट लगाते हुए पाकर कहता है–

सुस्पष्ट देखता जाता था(पहचान रहा था रूप, पा रहा वाणी और बूकता शब्द उपर्युक्त पंक्तियों में कवि यह बतलाता है कि कवि द्रष्टा या विचारक होता है। द्रष्टा होने के नाते वह जीवन को अपनी अन्तर्दृष्टि से देखता है, जीवन के सत्य को जानने का प्रयास करता हे। अपनी अनुभूतियों को भाषाबद्ध करके उसे प्रकाशित करता है। इस प्रकार देखा जा सकता है कति का सीधा सम्बन्ध जीवन से होता है। जीवन मूल्यों से वह आनायास जुड़ जाता है।

दूसरे कविता खण्ड 'बना दे चितेरे' में कवि आत्मा, जल, नभ एवं अन्तहीन उदीषा से टंकित होने का उत्सुक है क्योंकि उसका मानना है कि इस प्रकार उदग्र होकर ही वह परम चेतना में विलीन होने योग्य बन सकेगी। **जैसे–''एक जिस बुलबुले की ओर में हुआ हूँ उदग्र, वह अन्तहीन काल तक मुझे खींचता रहे।''**

अज्ञेय का कवि जीवन मूल्यों को सर्वाधिक मूल्यवान मानते हुए कहता है ''लो यह स्मृति, यह श्रद्धा, यह हंसी, यह आहूत, स्पर्श पूत भाव'' अर्थात ये सबके सब ऐसे मूल्य है जिनका स्थूल जगत् की तुला पर आकलन कर पाना असम्भव है।

''पास और दूर'' कवितांश, 'अन्त% सलिला' के अन्य कवितांशो से भिन्न सा होते हुए अपनी पृथक पहचान बनाता है। श्रमिकों के प्रति उपजी संवेदनशीलता से निःसृत विचार, मानव प्रेम से आहूत भावना एवं उनसे जुड़े होने की उदत्तता भारतीय चिन्तन परम्परा से सम्पृक्त होते हुए समकालीन प्रगतिवादी विचारधारा को दृढ़ता से आलम्ब देने में पूर्ण सक्षम है। प्रेम ही जीवन का सारतत्व है, कुछ ऐसे ही जीवन मूल्यों को अभिव्यक्त करते हए कवि कहता है–

जो प्यार कहा था तुमने ही है सारतत्व जीवन का
वही अनामय निर्विकार, चिरतत्व। मैंने तुम्हें दिया।

इस प्रकार हमें देखनें को मिलता है कि 'अन्तः सलिला' में अज्ञेय का कवि प्रेम के प्रवाह में गतिमान होते हुए कहीं–कहीं व्यक्तिगत प्रेम की व्यथा में डूबता उतराता तो है परन्तु सार्वभौमिक प्रेम का नैकट्य पाते ही उसके अलौकिक वेग से अपने अस्तित्व को अभिसंचित कर उसके दिव्य आलोक में निज सत्ता को पहचान कर उसमें समाहित हो जाने की स्थिति बनाता है। अन्तः सलिला का कवि प्रेम की सरिता में प्रवाहित हुआ शनैः शनैः 'चक्रान्तशीला' तक पहुँचते हुए ज्ञान पुंज में प्रतिष्ठित होकर निज अस्तित्व की दृढ़ता से अवगत होता है। 'चक्रान्तशीला' के द्वितीय खण्ड में आद्योपान्त कवि अदृश्य सत्ता में अपने को विलीन हुआ अनुभव करता है। वन, झरना, वृक्ष, वृक्षों की कोंपलों में प्रतिक्षण

होने वाले परिवर्तन क्रम में कवि को नव जीवन संज्ञा प्रकट होती दिखती है। कवि कहता है कि प्रत्येक व्यक्ति को नश्वर शाश्वत का अन्तर समझकर जीवन को साधने का प्रयास करना चाहिए। जैसे–

मोती जो चाहते हो। उसकी पहचान अगर यह नहीं। तो ओर क्या है?

नश्वर में स्थित शाश्वत सत्ता ही मोती है, इसे पहचानकर, निज सत्ता से अवगत होकर, मुक्त जीवन यापन करना ही जीवन की सार्थकता है। सभी मूल्यों का यही मूल्य है। इस प्रकार अज्ञेय जीवन ओर जगत् का चिन्तन करते हुए जीवन की सार्थकता को असीम की अनुभूति से जोड़ते हैं। अन्तिम अंश में कवि ने कहा है कि जीवन के आर–पार की यात्रा पूरी करने पर प्राणी का वर्तमान जीवन रूपी दृश्य भवन अदृश्य होकर उसे सृष्टि की अनन्त यात्रा में उपस्थित कर देता है। असाध्य वीणा अज्ञेय की अन्तिम दीर्घ कविता है। यहाँ पहुँचकर कवि अनुभूति के उस धरातल पर जा खड़ा होता है जहाँ प्रेम इस से आकृष्ट–तृप्त और ज्ञान शिक्षा से पूर्णतः प्रकाशित अपनी संवेदनशीलता को क्रिया की पावन यज्ञशाला में प्रविष्ट हो पाता है।

वीणा जिसे असाध्य समझा जाता है, को साधने का प्रश्न है। यह वीणा साधारण वाद्ययंत्र नहीं है, यह तो महान संगीतज्ञ वज्रकीर्ति की अभिमंत्रित वीणा है। केश कम्बली एक साधारण व्यक्ति है पर वह अपने आपको परम शक्ति के रूप में उपस्थित किरीट–तरू की गोद में समर्पित करके निवेदन करता है। धीरे–धीरे वह इतनी पूर्णता के साथ अर्न्तमुखी हो जाता है कि उसे निज अस्तित्व का भी ज्ञान नहीं रहता। वह कहता है– अपनी प्रज्ञा को वाणी दे, तू गा, तू गा।

'असाध्य वीणा' एक विराट काल में वज्रकिर्ति की कठिन साधना से निर्मित हुई है। कवि अपनी कल्पना से किरीट तरू कृष्ण के विराट रूप सा हो जाता है और अपने अन्दर धरती, आकाश और पाताल को समेटता है। भारतीय संस्कृति में वृक्ष जीवन की समग्रता का रूपक है। 'असाध्य वीणा' के प्रियंवद मानवीय अंतर्जगत और सम्पूर्ण सृष्टि को महत्व देता है। प्रियंवद ज्ञान को मानवीय मूल्यों से जोड़ता है।

प्रियंवद किरीट तरू से आंतरिक संवाद करता है। वह संवाद तभी कर पाता है जब अपने अंहकार का विसर्जन कर आत्मलीन होता है। वह दूसरे कलावंतों की तरह सिद्ध नहीं है, साधनावस्था में है। उसे न कोई अहं है और न कोई नैतिक दबाव। जैसे– कलावंत नहीं(शिष्य साधन हूँ।

बस इसी समर्पण, तन्मयता से वीणा झनझना उठीं। ये भाव ही मूल्य है। जीवन के प्रति आस्थावान बने रहने की प्रेरणा, साथ ही दुख में भी हार न मानकर उससे प्रेरणा ग्रहण करने का सन्देश उन्होंने दिया है। ये मूल्य ही जीवन को आगे बढ़ाते हैं। जैसे दुख सबको मांजता है और चाहे

स्वयं सबको मुक्ति देना वह न जाने किन्तु जिनको मांजता है उन्हें यह सीख देता है कि सबको मुक्त रखें।

अतीत, वर्तमान और भविष्य इन तीन काल खण्डों में वर्तमान काल की वह अवस्था है, जिससे काल की समसामयिकता ही नहीं अपितु उसकी निरूतरता का बोध होता है। वर्तमान निरन्तर है, काल का नैरूतर्य ही वर्तमान होकर सर्वदा प्रकट होता है। हम काल की पूर्वगामी स्थिति को अतीत तथा अन्तरगामी स्थिति को भविष्य के रूप में जानते हैं।

कविता और जीवन मूल्यों का सम्बन्ध एक ऐसा विषय है जिस पर स्वतंत्र रूप से विचार करना अपेक्षित है। आधुनिक धारा के कवि 'अज्ञेय' ने अपनी रचनाओं को समसामयिकता से जोड़ते हुए विविध जीवन–मूल्य स्थापित करने का सार्थक प्रयास किया है। उनकी दीर्घ कविताएं 'असाध्य वीणा', 'चक्रान्तकशला' एवं 'अन्तः सलिला' आदि रचनाओं में इन्हें स्थान–स्थान पर देखा जा सकता है। सभी मूल्य मानव जीवन से सम्बन्धित होते हैं। इसलिए मूल्यों को मानव–जीवन से अलग रखकर नहीं देखा जा सकता है। मनुष्य और समाज के साथ ही मूल्यों का आर्विभाव और विकास होता है।

संदर्भ ग्रन्थ :

1. आंगन के पार द्वार – भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन (1975)
2. अज्ञेय (राजकमल एण्ड संस, दिल्ली) – 1988
3. आधुनिक कविता और जीवन मूल्य (लेखक– डॉ. प्रतापसिंह)
4. काव्यांगिनी दिग्दर्शन – प्रो. राजकुमार शर्मा

IJARASEM

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |

www.ijarasem.com